eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

समकालीन हिन्दी कविता में किसान जीवन

डॉ0 सुमति सिंह[1]
[1]प्रतापगढ, उ0प्र0
Received: 20 Jan 2025, Accepted: 25 Jan 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2025

Abstract

समकालीन हिन्दी कविता में किसान जीवन का चित्रण भारतीय ग्रामीण समाज की वास्तविकताओं, संघर्षों और विडंबनाओं को अभिव्यक्त करता है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, बाजारवाद, जलवायु परिवर्तन तथा कृषि संकट के प्रभावों ने किसान के जीवन को अत्यंत जटिल बना दिया है। कवियों ने अपनी संवेदनशील दृष्टि से किसान की आर्थिक विषमता, ऋणग्रस्तता, आत्महत्या, विस्थापन और श्रम की अवमूल्यता को गहराई से उकेरा है। समकालीन कविता में किसान केवल अन्नदाता के रूप में नहीं, बल्कि एक पीड़ित, संघर्षशील और उपेक्षित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में उभरता है। इसमें प्रकृति के साथ उसके जीवंत संबंध, परंपरागत जीवन–मूल्य और बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश का द्वंद्व भी परिलक्षित होता है। इस प्रकार, समकालीन हिन्दी कविता किसान जीवन के बहुआयामी यथार्थ को उद्घाटित करते हुए समाज को संवेदनशील बनाने का कार्य करती है।

कुंजी शब्द– किसान जीवन, समकालीन हिन्दी कविता, कृषि संकट, वैश्वीकरण, ग्रामीण समाज, आर्थिक विषमता, किसान आत्महत्या, सामाजिक यथार्थ

Introduction

हिन्दी कवियों ने किसानों के समूह को सर्वहीनो और शोषितों का समूह माना है ।उन्होंने किसानों के प्रतिदिन के उन पक्षों को स्पर्श किया है, जो प्रत्येक सहृदय व्यक्ति को संवेदना के धरातल पर कहीं न कहीं छू जाते हैं। हिन्दी कवि इस समुदाय के प्रति अपनी कविताओं के द्वारा सहानुभूति प्रकट करते हैं। कवि, किसान की स्थिति पर वह बहुत दुखी एवं पीड़ित है। इसलिए अपनी संवेदना को व्यक्त करते हुए धूमिल कहते हैं, ' दुकान' किसान को 'मिट्टी' बना रही पूँजीवादी षडयंत्र बहुत खतरनाक है, आदमखोर है। प्रसिद्ध कवि हरिओम पवार किसानों की आत्महत्या एवं भुखमरी से दुखी हैं लखनऊ के एक कवि सम्मेलन में उन्होंने हमारी सरकार पर एक चाबुक चलाया है अवश्य ही उनका यह प्रश्न भारतीय जन–मानस के हृदय में चुभेगा। दिनकर जी अपनी कविताओं में कृषक से साथ–साथ उसके परिवार की दीन– हीन दशा का यथार्थ चित्रण करते हैं जमींदारों के घर एक ओर अन्न और दूध से भरे हैं। वहीं दूसरी ओर किसानों के बच्चे दूध के विना मर जाते हैं। दिनकर जी को दिल्ली का राजवैभव, गरीब किसानों के रक्त रंजित प्रतीत होता है। खेतिहर मजदूर बंधुआ मजदूर को जमींदार षडयंत्र, झाँसा, प्रलोभन और आतंक द्वारा बर्बाद कर रहें हैं। सरकार किसानों का दुख–दर्द नहीं सुलझाती है। केवल लगान वसूल करती है। ऐसी स्थिति में किसान शोषित करते हैं, हम सरकार हैं

प्रसिद्ध कवि हरिओम पंवार ने किसानों की आत्महत्या एवं, भुखमरी पर कविता में यथार्थ चित्रण किया है –"आत्महत्या की चिता, पर देखकर किसान को, नींद कैसे आ रही है, देश के प्रधान का सोचकर यह शोक धर्म से भरा हुआ हूँ और मेरे, काव्य धर्म से डरा हुआ हूँ मैं । मैं स्वयं को आज गुनेहगार पाने लगा हूँ, इसलिए मैं भुखमरी के गीत गाने लगा हूँ। गा रहा हूँ इसलिए कि इन्कलाब ला सकूँ झोपड़ी के अंधेरों में आफताब ला सकूँ।"

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य–धारा के कवियों ने कृषि श्रमिकों की दयनीय दशा के हर रूप को अपनी कविता में अंकित किया है, जो किसान कठोर परिश्रम करके अन्न पैदा कर सभी को रोटी प्रदान करता है। स्वयं उसके पास अपने खाने को रोटी नसीब नहीं होती उसकी दशा अत्यन्त करुण एवं मार्मिक है महाकवि दिनकर अपनी कविता 'हुंकार' में कृषि श्रमिकों की दयनीय दशा एवं इनकी विवशता का चित्रण करते हुए कहते हैकृ

"जेठ हो, कि पूस हमारे कृषकों को आराम नहीं है,
छूटे बैल से संग कभी जीवन में ऐसा हुआ नहीं है।
मुख में जीभ शक्ति भुज में, जीवन में सुख का नाम नही है,
वसन कहाँ? सुखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नही है।"

हिन्दी साहित्य का कवि अपनी कविता के माध्यम से कृषि श्रमिकों के साथ पूरी सहानुभूति रखता है। उनकी कविता, उनके लिए लोटे का जल, बच्चों के दूध और कभी–कभी बेबसी के आँसू बनकर सामने आती है। कवि इन किसानों में ईश्वर का वास मानता है। इसका कारण है, कि किसान वर्षा दृ धूप की परवाह न करते हुए किसी सिपाही की तरह खेतो में जूझता रहता है, काम करता रहता है।

कवि किसानों का शोषण एवं उसकी दयनीय स्थिति का तीव्र अनुभूति के साथ अंकन करता है। तथा उनसे अपनी सहानुभूति प्रकट करता है उनकी कविता में जमींदारों द्वारा लगान बढ़ाकर किसानों का शोषण करने के असाधारण उदाहरल सामने आते हैं। एक और जहां निर्धन किसान अभावग्रस्त जीवन व्यवीत करते हुए भर जाते है। वहीं दूसरी ओर, जमींदार इन किसानों से वसूले लगान के पैसे से अपना जीवन वैभवपूर्ण ढंग से व्यतीत करते हैं। किसान मेहनत करके अन्नाज पैदा करते है। इसी के विषय में मैथिलीशरण गुप्त अपनी कविता "कृषक–कथा" में कहते हैं

"आयी जमींदार की वारी, जमादार का हुक्म हुआ,
इस बार खेत में तुम डालना खाद।
उसी राह के मिलते हैं, अब चन्द्रह के पच्चीस।
तुरहीं जोतना चाहो, तो फिर देने होंगे तीस।"

हिन्दी के महाकवि दिनकर जी ने अपनी कविता में किसानों की दीन–हीन दशा का यथार्थ चित्रण किया हैं

"आहे उठी, दीन कृषकों की मजदूरी की तड़प पुकारें,
अरी गरीबी की लोहे पर खड़ी हुई तेरी दीवारें ।
अंकित हैं कृषकों के दृग में तेरी निठर निरानी,
दुखियों की कुटिया रोरो कहती तेरी मनमानी ।"

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

शोषण के कारण भारतीय किसान रोटी को मोहताज हो गया ।किसानों की मजबूरियों का लाभ जमींदारों ने बखूबी उठाया हिन्दी साहित्य का कवि किसानों के लिए क्रान्ति का मार्ग अपनाता है। वह उसे शोषण से मुक्त देखना चाहता है। दिनकर जैसे कवियों ने आजाद भारत के लिए किसानों में अपने ऊपर होने वाले अत्याचार के खिलाफ क्रान्ति करने का संदेश दिया है। इस किसानों की चिन्ता करने वाले कवियों की कविता किसानों के हर रूप का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने में सफल हुई है। किसान हृदय कवि रामअवतार नागर अपनी कविता के माध्यम से किसानों की पीड़ा एवं सरकार द्वारा किसानों के ऊपर, बर्बर अत्याचार का वर्णन इस प्रकार से करते हैं "कृषि प्रधान देश नहीं यह उद्योग प्रधान हैं, तभी तो गोलियों से मारा जा रहा किसान को अधिकृत किया जा रहा खेत –खलिहान को, माफ कर रहे कर्ज उद्योग घरानों का भाव फुसलों का बढ़ रहा की मकानों का, पानी तो दे दिया पूरा पेहसी कोकावालों का। आयात, किया जा रहा विचौलियों से दालों जिंक के नाम पर पूरी फसलें खराब कीटनाशकों ने पूरी नस्लें खराब कर दी "

कवि किसानो की तरह कृषक मजदूरों की अत्यंत सोचनीय एवं दुयनीय स्थिति को अपनी कविता में स्थान देता है। उसका संवेदनशील हृदय शोषित किसान की रुदनशील आवाज को अपनी लेखनी, रूपी टूलिका से चित्रित करता है। उसका सम्पूर्ण जीवन, अभावग्रस्त एवं अनेक कठिनाइयों से भरा है इस संदर्भ में मैथिली शरण गुप्त अपनी कविता 'विश्व वेदना' में कहते है –

"कुराकर सौ–सौ से उद्योग एक ही करता है, सब भोग

यंत्र जीते हैं, मरते लोग, फैलते हैं नित– नूतन रोग"

कृषक वर्ग झोपड़ी में रहकर समस्त जीवन निर्धनता में व्यतीत करता है, वही पूंजीवादी वर्ग दिन–रात अमीर होता जा रहा है और किसान आर्थिक दुर्दशा का शिकार होता जा रहा हैं उनके रक्षक ही उनके भक्षक बन गये हैं। किसान कठिन परिश्रम करते हैं, परन्तु उसका लाभ पूंजीपति वर्ग ही उठाते हैं कवि के हृदय में जमींदार, पूँजीपति वर्ग के प्रति घृणा तथा किसान के प्रति सहानुभूति परक संवेदना एवं समाज में हो रहे अत्याचार एवं शोषण के प्रति आक्रोश है। कवि यह मानता है कि, मानव–विकास का मार्ग अवरुद्ध करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक व्यापारों का शोषण नीति का विनाश आवश्यक है महाकवि दिनकर अपनी कविता 'कुरुक्षेत्र' के सप्तम सर्ग में इसका अनुमोदन करते हुए दिखाई देते हैं –

"न्यायोचित सुख–सुलभ नहीं, जब तक मानव– मानव को,

चौन कहाँ धरती पर तब तक, शान्ति कहाँ इस मन को?

जब तक मनुज–मनुज का यह, सुख–भाग नहीं सम होगा,

शामिल न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा?"

कवि इस बात से चिंतित है कि किसानों को कठोर परिश्रम करके भी यथोचित पारिश्रमिक नहीं मिलता था। कविवर माखन लाल चतुर्वेदी किसानों के शोषण का यथार्थ चित्रण करते है।उनका कहना कि शोषण अपनी पराकाष्ठा तक उसके प्रति विद्रोह अवश्यम्भावी हो जाता है। माखन लाल चतुर्वेदी इस क्रान्ति का श्री गणेश करते हुए 'अपनी, कविता युग चरण– मुक्त गगन है, मुक्त पवन है में लिखते है –

"तोड़ अमीरों के मनसूबे

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

गिन ने दिनों की घड़ियाँ,

बुला रही है, तुझे देश की,

कोटि–कोटि झोपड़ियाँ।”

कवि के मन में जहाँ एक ओर किसानों की दीन –हीन, दयनीय एवं असहाय स्थिति के प्रति मन मे आक्रोश है वहीं क्रान्ति के माध्यम से इनकी परिस्थितियो में सुधार की भावना भी है।

आज के युग में नौकरशाही शासन अपने पंख फैला चुका हैं।पहले के समाज की तुलना में अब किसानों की स्थिति अधिक गिर चुकी है। मजदूरो की इस दशा का वर्णन, कवि माखन लाल चतुर्वेदी अपनी कविता (लाल टीका–समर्पण) इस प्रकार से वर्णन करते हैं–”और फिर चुप–चाप, नौकर ही भरेगा पेट अपना पीढियाँ बंधन मई हैं मूलकर निः सार सपना” राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य–धारा के युग में भौतिकवाद विकास हो रहा है। एक ओर जहाँ पूंजीपति वर्ग भौतिक संसाधन जुटाने में लगा है, वहीं दूसरी ओर... गरीब वर्ग के पास प्राथमिक आवश्यकता की वस्तुएँ अन्न, वस्त्र, आवास तक, नहीं हैं। इस समस्या से कवि का ह्दय दुखी एवं यथित है। वह मानव को अन्न वस्तु एवं आवास जैसी प्राथमिक आवश्यकताओ की पूर्ति लिए चिंतित देखकर शोक व्यक्त करता है तथा प्रस्तुत चिन्ता से उसे मुक्त करना चाहता हैं महाकवि मैथिलीशरण गुप्त इसी सन्दर्भ में कहते हैं –

” अन्न–वस्त्र से हो निज ग्राम

हो निश्चित न ले विश्राम

आवश्यक साधन सब अन्य

स्वयं सिद्ध करके हो धन्य ।”

आज किसान की हालत इतनी बद से बदतर हो चुकी है, कि वह फांसी लगाकर आत्महत्या करने को मजबूर हो गया है। किसान की इसी, पीड़ा को 2013 में शमसाबाद मध्य प्रदेश में हुए एक कवि सम्मेलन में कविकर संदीप भोला अपनी कविता के माध्यम से दूख भदे शब्दों से अपने ह्दय के उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहते है – ” जो देता है खुशहाली, जिसके दम पर हरियाली, आज वही बर्बाद, खड़ा है, देखो उसकी बदहालीन बहुत बुरी हालत है ईश्वर, धरती के अगवान टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की। ऐसी आँधी चली की घर का तिनका–तिनका बिखर गया आखिर धरती माँ से उसका, प्यारा बेटा बिछड़ गया। अखबारों की रददी बनकर, बिकी कथा बलिदान की, टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की। इतना सूद चुकाया उसने, खुद अपनी सूघ भूल गया, सावन के मौसम में, झूला लगा के फाँसी झूल गया। अमुआ की डाली पर देखो लाश टंगी ईमाने कीं टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की।”

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य के कवि किसानों की दशा पर चिंतित हैं। इसी कारण इनकी कविताओं, मे पूजीपतियों एवं सरकार के विरुद्ध विद्रोह के स्वर उभरते हैं। कवि चाहते हैं कि किसानों का अभावग्रस्त जीवन समाप्त हो वह भी सम्पन्न परिवार के जैसे ही अपने बच्चों का पालन–पोषण कर सके। वह भी किसानों को शोषण मुक्त देखना चाहता है। इसी लिए उनकी कविताओं में किसानों के ऊपर होने वाले अत्याचार के विरोध में क्रांति के स्वर उभरते रहे है।

किसान मानव–सभ्यता के साथ तब से जुड़ा है, जब कृषि–कार्य प्रारम्भ हुआ जबकि खेतिहर का उदय पूंजीवादी उत्पादन यानि बाजार में बेचकर सुनाफा कमाने की प्रवृत्ति के प्राबल्य के साथ हुआ । इसे थोड़ा स्पष्ट करने के लिए इतिहास में जाना आवश्यक है। भारत में कृषक शब्द अतीत काल से प्रचलित है और 'अमरकोश' के द्वितीय काण्ड के नौवे सूर्ग में उससे जुड़े कार्य–व्यापार का विस्तृत उल्लेख है। 'किसान' शब्द फारसी और संस्कृत के मिलन का परिणाम है।

किसान कभी कविता में चर्चा का विषय नहीं बना, इसे इस बात से भी समझा जा सकता है, कि किसान को लेकर रची गयी, के कभी मुख्य विमर्श हिस्सा नहीं बनीं। हिन्दी के प्रमुख प्रकाशनों ने मुख्य कवियों की रचनाओं को पाठको तक पहुंचाने के लिए उनकी 'प्रतिनिधि' कविताओं के संकलन प्रकाशित किए, लेकिन इस संकलनों में किसान को केन्द्रित करके रची गयी कविताओं का अकाल है। जिन कवियों ने किसमों को अपनी कविताओं को अपना विषय बनाया, वे कविताए संकलन कर्ताऔ की रुचि कैंची से कतर दी गयी। किसानों को लेकर जो कविताएँ लिखी गयीं वो अधिकदर फुटकर ही देखने को मिलती हैं, और सभी रचनाकारों ने किसानों की समस्याओं को ही अपनी कविता का विषय बनाया। यथार्थ चित्रणकर्त्ता 'राकेशधर द्विवेदी की कविता 'किसान' –

"देखता हूँ निट दिन मैं एक इंसान को धूप मे जलता हुआ, शिशिर में पिसता हुआ

वस्त्र है, फटे हुए पांव हैं जले हुए पेट–पीढ एक है बिना हेल्थ जोन गए हुए

× × × × ×

खड़ी फसल जल रही

सूद–ब्याज बढ़ रही

पुत्र प्यासा रो रहा

दूध के इन्तजार में

× × × × ×

कष्ट में वह पूछता है

- कर्म फल कब पाऊँगा ?

या यूँ ही संघर्ष करता

परलोक सिधार जाएगा।"

ऐसे किसान, जो गाँव से दूर आ गये हैं, और गाँव उसको कभी सपने में दिखायी देता है, तो कभी प्रकृति में। किसन के संघर्ष उसके जीवन अन्तरविरोध, उसके जीवन के विरोधाभाव यहां से लगभग गायब है। किसानी जीवन की ऐसी स्मृतियों के बिम्बू इनकी कविताओं में होते हैं जैसे कि स्मृतियों की तरह से वे उस जीवन की रोमांतिक किस्म का लगाव हैं।

आधुनिक कविता में किसान जीवन के विभिन्न पक्षों के, चित्र देखने को मिलते हैं। किसान जीवन के वास्तनिक सुख–दुख, आशा–निराशा, और संघर्ष साथ–साथ काल्पनिक विजय उल्लास भी। वह खेती करता

दिखायी देता है प्रकृति से प्रेम करता नजर आता है। अपने परिवार के लिए मेहनत करता नजर आता है। कविता में किसान जीते–जागते, हाँड–माँस का व्यक्ति, भी है, और एक धारणा मांत्र भी। किसान के विभिन्न स्वर भी हैं।

धनी किसान भी हैं, मध्यवर्गीय भी और खेतिहर मजदूर भी। अन्ट, में, यही कुहना समीचीन प्रतीत होता है कि 'मै किसान मेरा हाल क्या मै तो आसमा दया पहुँ कभी मौसमों ने हंसा दिया, तो कभी मौसमों ने रुला दिया', किसी शायर की लाइनें बिल्कुल सटीक बैठती है। आज हमारे, अन्नदाल किसान सिर्फ प्रकृति पर ही निर्भर है। हमारे आज के सम्पूर्ण, भारतवर्ष में किसानों की आर्थिक स्थिति कैसी है ? उनको किस मुश्किलों का सामना करना, पड़ रहा है? यह एक विचारणीय प्रशन है। किसानों का तो आत्महत्या करना भी दुर्भाग्यपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसा न हो, हमें उपाय तलाशने होंगे। जैसा कि मुझे लगता है, कि किसानों में से काई लोग , भारी कर्ज में डूबे हुए हैं। इसके बावजूद 'डॉ० सुदेश यादव' दिव्य किसानों को भगवान का दर्जा देते हुए लिखते है –

"तू ही पैदा करता अन्न,
नहीं मिलता पूरा धन,
ढक घाडी न तू तेन,
तेरे घर न निवाला है,
हम पर तेरे अध्सान
तू है कितना महान ,
तुझे कहे दु भगवान,
तूने ही सबको पाला है।"

देश में कृषि की दशा पिछले कुछ वर्षों से बहुत ही खराब होती जा रही है। "यद्यपि पारंपरिक रूप से खेती पारिवारिक व्यवसाय रहा है, लेकिन तब वह परिवार आजीविका के निर्देशन के लिए अत्याधिक और दानोपार्जन के लिए कम होती है। वैश्वीकरण के युग में मूल्यों की अस्थिरता जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की अनिश्चितता ने किसानों की मुश्किलें बढ़ा दी है जिससे परिवार आधारित कृषि निटान्त असुरक्षित और अलाभकारी हो गयी है। इसके बावजूद भी किसान अपना मुंछ श्रम से नहीं मोडता नहीं मोड़ता।"मेहनत किसान की कविता में 'रविश्रीमंस्तव' ने सभी मौसम में किसानों द्वारा किये जाने वाले श्रम को रेखांकित करते लिखते हैं "मेहनत किसान की, कैसे भूल रहे, कर्ज, गरीबी, भुखमरी से तंग हो किसान मरे। दूसरों का पेट भर, अपनी जान तो दी, आखिर हम कैसे भूल गए, मेहनत किसान की। कोई परेशान है सास–बहू के रिश्तों में, किसान परेशान हैं कर्ज की।"

किश्तों में।' से पंक्तियाँ आज के किसानों पर सटीक बैठती है। आज देश के किसानो को अनेक समस्याओं से रुबरू होना पड़ रहा है। जिसके प्राकृतिक आपदाओं के बाद सबसे बड़ी समस्या जोत का घटना, अनाज का सही मूल्य न मिलना तथा कर्ज द्य कर्ज एक ऐसा मेहमान है जो आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। सरकार की तमाम कोशिशों एवं दावों के बावजूद कर्ज के बोझ तले दबे किसानों की आत्महत्या का सिलसिला रुकने का नाम नही ले रहा है। राष्ट्रीय अपराध लेखा कार्यालय के आंकड़ों के

अनुसार देश में प्रत्येक महीने 70 से अधिक किसान आत्महत्या कर रहे रहे हैं। किसानों की आत्महत्यायें अब पूरे देश में हो रही हैं, जो देश के किसानों की बदहाली को दिखाती हैं। व्यवस्था का क्रूर, हिंसक एवं भयावह रूप प्रदर्शित करती है। ”किसानों के आत्महत्या करने के कारणो का विश्लेषण करते हुए ‘अंशुमान शर्मा सिंडप’ ने ‘एक किसान’ शीर्षक से कविता लिखी। जो व्यक्ति भर पेटू भोजन उपलब्ध कराता है आज नही मौत को गले लगा रहा हैं।

”दो दिन कुछ खाए बिना वो भूखा सोया था।

फसलों को अपनी देखकर, वो खूब रोया था ।।

× × × × ×

रहमत की भीख मांगी थी उसने, पर वक्त बहुत हो चला था।

दो दिन बाद, घर नीलाम होना था। वो एक दिन पहले छोड़ गया था।।

× × × × ×

खाकर जहर भी जब न मौत आयी

वो फांसी लगाकर लटक गया।

दूसरे दिन अखबार में छपा,

एक और किसान सहक गया।। ”

सही मायने में किसानों की किस्मत भी बड़ा बेरहम है। ”सामान्य रूप से हम लोग जानते है कि किसान की ही बदौलत सम्पूर्ण देश के लोगों की पांचों उंगलियाँ मुँह तक जा पाती है और उसका उदर भर पाता है वही किसान व मजदूर सबसे अधिक तकलीफ में है। वे किसान लगातार आत्महत्या कर रहे है। भारत की राजधानी में एक किसान द्वारा. आत्महत्या को आधार बनाकर, अन्तिमईच्छा शीर्षक कविता में आउट लुक पत्रिका के माध्यम से ‘पाणिनि आनन्द’ लिखते हैं,

”खून रोती आंखो वाली माँ, लेवा,बच्चे और खेत,

सबके सब तड़पकर जान दे देगें,

फिर भी नहीं बदलेंगी नियति,

इन भूखी आदमखोर नीतियों के दौर में कैसे बचेगा कोई किसान।

× × × × ×

हत्यारा सिर्फ हत्यारा होता है,

शेष बदलने से,

वो नीला सियार, लग सकता है,

साहूकार लग सकता है,

कलाकार लग सकता है,

बार बार, ऐसा सब लग सकता है,

लेकिन हत्यारा हत्यारा होता है,

चाहे किसान का हो,

किसी मरीज का,

किसी गरीब का,

किसी हुनर का, पहचान का,

कृति का, प्रकृति का,

हत्या किसी को नहीं देती यौवन,

ना शान्ति, न अभ्युदय,

किसान मेरा करे,

देश तमाशा देखता रहे,

ऐसे लाक्षागृह की सत्ता,

लहू के प्यासी नीतियाँ,

और लड़खड़ाते गणतन्त्र में आग लगे।"

सरकारों की उपेक्षा, और अमानवीयता के कारण अब किसानों का अपने पैरों पर उठ खड़ा हो पाना मुश्किल नजर आ रहा है, किसान और उसके परिवार की व्यथा–कथा सुने तो उनकी पीड़ा आपकी नसों में तेजाब भर देती है, परंतु नेताओं–नौकरशाहों को कुछ फर्क नहीं पड़ता। 'राज किशोर शर्मा' की कविता 'किसान की व्यथा' इसका जीवन उदाहरणी है।

" है किसान तेरी व्यथा, क्या जाने सरकार, पूंजीपति की नोट से, कुर्सी हुआ बहाल,

कुर्सी हुआ बहाल, बड़ा जड़ जंगम स्वामी, वह क्या जाने है कृषक, तेरी जिन्दगानी।"

इस कविता में सरकार का पूंजीपतियों के प्रति मोह और किसान के प्रति विछोह को प्रदर्शित करती है। सरकार की नीतियों से परेशान होकर किसान आज जहर पीने को मजबूर हो रहा है। लेकिन व्यवस्था को कोई फर्क नहीं पड़ता। 'किसान का दर्द' शीर्षक कविता में 'नीरज चौहान' लिखते हैं –

"व्यवस्था का जुल्मो–सितम

कुदरत का कहर पा रहा,

देखो मेरा अन्नदाता

खुद जहर पी रहा।

× × × × ×

बिलखती है खामोशी

चीखता है सन्नाहा,

पालन कर्ता मांग रहा है,

दो रोटी का आटा।

× × × × ×

अनब्याही बेटी ने दर्द शूल सा दिया है,

वो आज उसी को चुनरी से

पंरवे पर झूल गया है।

उपर्युक्त कवितव में नीरज चौहान' ने किसानों के परिवारों की दुर्दशी लड़ा ही, सटीक वर्णन किए हैं, कि जब कहीं से कोई आस नहीं दिखाई देती, है तो उनके परिवार के सदस्य भी अनन्त मौत को गले लगा लेते है।

इस सदी की नीतियों ने ऐसा हमला किया हैं कि अन्न उगाने वाले, किसान ही, भूख से मरने को विवश हैं अनाज पैदा करने वाले को ही स सबसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। कितनी विडम्बना है कि आज जो किसान पूरे देश के लिए भोजन उपलब्ध कराता है, उसी के बच्चे को स्कूल में पेट भरने के लिए हाँथ फैलाना पड़ता है। किसान अपनी तमाम समस्याओं को लेकर ब्लाक, तहसील, जिला, मण्डल, प्रदेश क्या जब हो तो दिल्ली की सड़कों पर भी आन्दोलनरत है, लेकिन, सरकार को उनकी सुध कहाँ। इन्हीं आन्दोलनों पर सरकार को ललकारती, अक्षयनन मेराव' की कविता सरकारों सुनी में देखन को मिलती है।

"एक एक किसान की हाय...!

उनकी पल्दियों और,

बेटा–बेटियों की गालियाँ भी,

सरकारों सुनो...

× × × × ×

तुन्हने नहीं मारा,

दो या पाँच किसानों को,

तुमने नहीं किया,

उनकी पत्नियों को बेवा.

में देखने क,

न किया उनके बच्चों को अनाथ...

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

× × × × ×

तुमने मारा है, समूचे भारत की,

उस मेहनत को,

जिससे धरती के सीने मे,

बोया जाता है अन्न का एक–एक दाना,

उस खून को जो बढ़ाता है,

धरती की उर्वरता को,

उस पसीने को जो सींचकर,

बड़ा करता है फसलें...

× × × × ×

सूर्य को तपाकर,

बादलों को पिघलाकरू,

और ठण्ड को सकझोर कर,

पैदा होता है अनाज का एक–एक दानर...

× × × × ×

सूर्य को तपाकर,

बदलो को पिछलाकर

और ठंड की झकझोर कर

पैदा होता है अनाज का एक एक दाना

× × × × ×

पर आज जब तुमने

किया है उसी को बेवा

उसी को अनाथ, मारा है उसकी

मेहनत को, खून को, पसीने को

तो निश्चित है

तुम भी भूखी मरोगी सरकारें .....।”

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि किसान अपने जीवन–पर्यन्त हड्डीतोड़ परिश्रम के बावजूद भी अपनी गरीबी, बदहाली, लाचारी और किस्मत को बदलने में असफल रहा। अब हो ऐसा लगता है, कि ईश्वर भी उनकी परीक्षा ले रहा है। लेकिन कब तक आखिर इन समस्याओं से उन्हें निजात कूब मिलेगा उनकी सही मायने में सुबह कब होगी ?

"बहुत गीत बुनें बहुत लेख छपे की मैं बड़ा महान हु,
पर दर्दशा न देखी किसी ने ,ऐसा में किसान हु।"

संदर्भ सूची

1. अटल तिवारी, किसान की पीड़ा पृष्ठ– 8
2. गौरीनाथ, कोसी के किसान, पृष्ठ 31
3. अमित भादुड़ी, विकास का आतंक पृष्ठ 37–38
4. अनुराग दीक्षित, इतने किसान संसद में फिर भी खेती तबाह, पृष्ठ–3
5. देश निर्मोही, मौन अवसाद को अभिव्यक्त करता किसानी विमर्श पृष्ठ–14
6. हुंकार– दिनकर, पृष्ठ– 22
7. विश्वेदना, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–15
8. कुरुक्षेत्र– सत्तमसर्ग दिनकर पृष्ठ सं०– 87
9. लालटिका, समर्पण–माखनलाल चतुर्वेदी पृ०–8
10. गाँवों का सुधार–हिन्दू–मैथिली शरण गुप्त पृ० 112